

डॉ. जॉन ओसवाल्ट, यशायाह, सत्र 24, ईसा। 49-51

© 2024 जॉन ओसवाल्ट और टेड हिल्डेब्रांट

यह यशायाह की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. जॉन ओसवाल्ट हैं। यह सत्र संख्या 24, यशायाह अध्याय 49 से 51 है।

आइये मिलकर प्रार्थना करें। पिता, हमारे बीच आपकी उपस्थिति के लिए हम आपको धन्यवाद देते हैं। हम कौन हैं और हमारे जीवन में क्या हो रहा है, आप में हमारे विकास में आपकी सक्रिय रुचि के लिए हम आपको धन्यवाद देते हैं। धन्यवाद।

हमारे मन और हमारे हृदयों को सक्रिय करने के लिए यहां आपकी पवित्र आत्मा की उपस्थिति के लिए धन्यवाद। हम इस अद्भुत पुस्तक के लिए आपको फिर से धन्यवाद देते हैं और प्रार्थना करते हैं कि आप आज रात इसकी कुछ संपदा हमारे लिए खोलेंगे। इस धन को अपने दिलों में लागू करने और बेहतर इंसान, बेहतर ईसाई बनने में हमारी मदद करें क्योंकि हमने यह समय एक साथ बिताया है। आपके नाम पर, हम प्रार्थना करते हैं। तथास्तु।

हम पुस्तक के भाग, यशायाह अध्याय 40 से 55 को देख रहे हैं। पहला मुख्य प्रभाग अध्याय 7 से 39 था। विश्वास, दासता का आधार है। मैंने यशायाह 40 से 55, ग्रेस, मोटिव, एंड मीन्स फॉर सर्वेंटहुड का शीर्षक दिया है।

हमने देखा कि अध्याय 40 को एक प्रस्तावना के रूप में कैसे समझा जा सकता है और हमने पिछले सप्ताह अनुग्रह, दासत्व का उद्देश्य, के बारे में अपना अध्ययन समाप्त किया। परमेश्वर ने उन से कहा, नहीं, मैंने तुम को त्यागा नहीं। मैं बेबीलोन की मूर्तियों से पराजित नहीं हुआ हूँ।

मैं तुम्हारे पाप से हारा नहीं हूँ। वास्तव में, मैं तुम्हें अपने चुने हुए सेवकों, मूर्तियों के खिलाफ एक मामले में अपने गवाह के रूप में उपयोग करने जा रहा हूँ, यह साबित करने के लिए कि मैं भगवान हूँ। इस प्रकार की कृपा से उन्हें उस पर भरोसा करने के लिए प्रेरित होना चाहिए।

इस प्रकार की कृपा से उन्हें उसकी सेवा में अपना जीवन देने के लिए प्रेरित होना चाहिए। लेकिन इससे एक सवाल उठता है। भगवान यह कैसे करने जा रहा है? क्या वह बस उनके पाप को नजरअंदाज करेगा? क्या वह ऐसे ही व्यवहार करेगा जैसे कि कुछ हुआ ही नहीं? मैंने आपसे कई बार कहा है, भगवान ऐसा नहीं कर सकते।

यह एक कारण और प्रभाव वाली दुनिया है। यदि वह कारण और प्रभाव को एक ही स्थान पर स्थगित कर देता है, तो पूरी चीज़ बिखर जाती है। तो, सवाल यह है कि भगवान उनके पाप को कैसे नज़रअंदाज़ कर सकते हैं, और उन्हें अपने सेवकों के रूप में कैसे ले सकते हैं? दूसरे तरीके से कहें तो, अध्याय 41 से 48 में ईश्वर द्वारा उन्हें बेबीलोन से छुड़ाने के बारे में बताया गया है।

लेकिन उनके पाप का क्या? वह उन्हें उनके पाप और उस पाप के परिणामस्वरूप होने वाले अलगाव से कैसे मुक्ति दिलाएगा? वह उन्हें वापस अपने साथ संगति में कैसे लाएगा? मैंने आपको

पहले भी इसका उल्लेख किया है, लेकिन मैं इसे फिर से कहना चाहता हूँ। अध्याय 41 से 48 में, यह बिल्कुल स्पष्ट है कि आप बेबीलोन से मुक्ति के बारे में बात कर रहे हैं। बेबीलोन के देवता, बेबीलोन का संदर्भ।

हमने अध्याय 47 में देखा कि कैसे बेबीलोन के देवताओं की सभी विफलताओं का निष्कर्ष यह है कि बेबीलोन अपमानित हुआ है। अब मुक्ति की भाषा 49 से 55 तक जारी है। बंधन से मुक्ति, कैद से मुक्ति, ईश्वर से मुक्ति, इस तरह की बात।

लेकिन बेबीलोन का कभी उल्लेख नहीं किया गया है। अब कई टिप्पणीकार कहेंगे, अरे हाँ, लेकिन आप अभी भी अध्याय 41 से 55 में वास्तव में निर्वासन से मुक्ति के बारे में बात कर रहे हैं। मैं आज रात, अगले सप्ताह और अगले सप्ताह आपको यह दिखाने का प्रयास करूँगा, जब हम इन अध्यायों को देखेंगे, तो मुझे क्यों नहीं लगता कि यह सच है।

हम केवल बेबीलोन से मुक्ति के बारे में बात नहीं कर रहे हैं। हम यहां मुक्ति के दूसरे स्तर के बारे में बात कर रहे हैं। तो आज रात, फिर से, अपने उपलब्ध समय को अधिकतम करने का प्रयास करने के लिए, हम तीन अध्याय, 49 से 51, देख रहे हैं।

अध्याय 49 शुरू होता है, हे तटवर्ती देशो, मेरी सुनो, हे दूर दूर के लोगो, ध्यान दो। प्रभु ने मुझे मेरी माता के गर्भ ही से बुलाया है। उसने मेरा नाम बताया।

उसने मेरे मुँह को तेज़ तलवार जैसा बना दिया। अपने हाथ के साये में उसने मुझे छुपा लिया। उसने मेरे लिए एक पॉलिश किया हुआ तीर बनाया।

अपने तरकश में, उसने मुझे छुपा लिया। उस ने मुझ से कहा, हे इस्राएल, तू मेरा दास है, जिस से मैं महिमा पाऊँगा। परन्तु मैंने कहा कि मेरा परिश्रम व्यर्थ गया।

मैंने अपनी शक्ति व्यर्थ और व्यर्थ में खर्च कर दी है। तौभी निश्चय मेरा अधिकार यहोवा के पास है, और मेरा प्रतिफल मेरे परमेश्वर के हाथ में है। अब सवाल यह है कि हम यहां किसकी बात कर रहे हैं? खैर, यह इज़राइल कहता है।

तो, यह स्पष्ट रूप से राष्ट्र है। क्या आपको इस परिच्छेद में जो कुछ हमने पहले पढ़ा है उसमें से कुछ भी दिखाई देता है जो उस पर प्रश्नचिह्न लगाता है? अध्याय 41 से 48 में इज़राइल का वर्णन कैसे किया गया है? अवज्ञाकारी. और क्या? ओ प्यारे।

मुझे लगता है कि आखिरकार मुझे ट्रक चलाना छोड़ देना चाहिए। एक छोटा ट्रक ले आओ. हाँ।

ठीक है। आइए अध्याय 42, श्लोक 18 और 19. 18, 19, 20 पर वापस जाएँ।

नौकर के बारे में क्या? मौत, अंधा, नहीं देख रहा. पद 20. वह बहुत सी चीज़ें देखता है परन्तु उन पर ध्यान नहीं देता।

उसके कान खुले हैं, परन्तु वह सुनता नहीं। पद 22. यह वह प्रजा है जो लूटी गई, और लूटी गई, और सब के सब गड़हों में फँसे हुए, और बन्दीगृहों में छिपे हुए हैं।

अध्याय 49. मैं उसके तरकश में छिपा हुआ एक पॉलिश किया हुआ तीर हूँ। मेल कह रहा है कि वह मसीहा होगा।

निःसन्देह मेरा अधिकार यहोवा के पास है, और मेरा प्रतिफल मेरे परमेश्वर के पास है। तो, अगर यह इज़राइल है, तो यह एक अलग तरह का इज़राइल है। हमें अब आगे बढ़ना चाहिए।

श्लोक पांच. अब यहोवा यों कहता है, जिस ने मुझे गर्भ ही से इसलिये रचा कि मैं उसका दास बनूँ? याकूब को उसके पास वापस लाओ। जारी रखें।

और इस्राएल को इकट्ठा करो। अब, एक मिनट रुकें. इसराइल इसराइल को कैसे इकट्ठा करेगा? दरअसल, यहां हम स्पष्ट रूप से जिस आदर्श इज़राइल की बात कर रहे हैं, वह इज़राइल के लिए क्या होगा, जो इज़राइल अपने आप में कभी नहीं बन पाया।

मैं आपसे अध्याय 42, श्लोक एक से नौ तक को देखने के लिए कहता हूँ। और आपने नोटिस किया. छंद छह, मैं भगवान हूँ.

मैं ने तुम्हें धर्म से बुलाया है। मैं तुम्हारा हाथ पकड़कर तुम्हें रखूंगा। मैं तुम्हें लोगों के लिये वाचा, और अन्यजातियों के लिये ज्योति ठहराऊंगा, कि अंधों की आंखें खोल दूँ, और बन्दियों को अन्धियारे में से जो अन्धेरे में बैठे हैं, कालकोठरी में से निकालूंगा।

और यहाँ अध्याय 49, छंद छह में, यह एक बात उजागर करने के लिए है कि तुम्हें याकूब के गोत्रों को बढ़ाने और इस्राएल के संरक्षित लोगों को वापस लाने के लिए मेरा सेवक बनना चाहिए। मैं तुम्हें राष्ट्रों के लिए ज्योति बनाऊंगा ताकि मेरा उद्धार पृथ्वी के अंत तक पहुंचे। इस्राएल को बचाने के लिए इस सेवक के लिए यह बहुत छोटी चीज़ है।

यह सेवक पृथ्वी को बचाने वाला है। फिर, हम बिल्कुल स्पष्ट रूप से राष्ट्रों के बारे में बात नहीं कर रहे हैं। अब श्लोक सात को देखें।

संसार इस घृणित सेवक के प्रति कैसी प्रतिक्रिया करता है? फिर श्लोक आठ से 12 में, भगवान सेवक से बात कर रहे हैं और देखो वह क्या करने जा रहा है। श्लोक आठ, मैं तुम्हें रखूंगा और तुम्हें लोगों को वाचा के रूप में दूंगा।

वही बात जो अध्याय 42 में कही गई है, भूमि बसाना, उजड़ी हुई धरोहरों का बंटवारा करना, क्या करना? कैदियों से कहो. अब फिर आप देखिए, अगर इज़राइल जेल में है तो इज़राइल कैदी से यह नहीं कह सकता कि बाहर आ जाओ. इसलिए, श्लोक 11, मैं अपने सभी पहाड़ों को एक सड़क बनाऊंगा और मेरे राजमार्ग ऊंचे किए जाएंगे।

देखो, ये दूर से आएँगे। ये उत्तर से हैं, पश्चिम से हैं, ये सियेन की भूमि से हैं। अध्याय 35 श्लोक आठ पर वापस जाएँ।

वहां क्या होगा? एक राजमार्ग, पवित्रता का एक राजमार्ग। और पद 10 हमें बताता है कि उस राजमार्ग पर कौन चलेगा। यहोवा के छुड़ाए हुए लोग लौट आएंगे, और गाते हुए सियोन में आएंगे।

स्पष्टतः, यह सेवक न केवल इस्राएल को बल्कि विश्व को परमेश्वर के हाथों में पुनर्स्थापित कर रहा है। जब तक उनके पापों के बारे में कुछ नहीं किया जाता तब तक लोगों को उनकी ज़मीन पर वापस लाना पर्याप्त नहीं होगा। अन्यथा, हम अक्षम्य पाप के साथ उसी झंझट में हैं जिसमें हम पहले थे।

अब श्लोक दो पर फिर से नजर डालें। उसने अपने हाथ की छाया में मेरा मुँह तेज़ तलवार जैसा बना दिया। उसने मुझे छुपाया।

उसने मुझे अपने तरकश में एक तराशा हुआ तीर बना दिया। उसने मुझे छुपा दिया। अब मैं आपसे अध्याय 11, श्लोक चार को देखने के लिए कहता हूँ।

क्या कोई अपना होमवर्क करता है? देखिए श्लोक चार क्या कहता है। वह अपने मुँह की छड़ी से पृथ्वी पर प्रहार करेगा। वह अपने होठों की सांस से दुष्टों को मार डालेगा।

उसने मेरे मुँह को तेज़ तलवार बना दिया है। बिल्कुल वही बात कह रहे हैं, है ना? खैर, अध्याय 11 स्पष्ट रूप से मसीहा के बारे में है। तो, यह नौकर कौन है? ये नौकर ही मसीहा है।

यह इजराइल राष्ट्र नहीं है। यह आदर्श इजराइल है, जो इजराइल के लिए वह है जो इजराइल अपने लिए कभी नहीं हो सकता। ठीक है, अब श्लोक 13 में प्रतिक्रिया को देखें।

क्या प्रतिक्रिया है? खुशी के लिए गाओ। जयजयकार करो, हे आनंद से गाओ, हे स्वर्ग! जय हो, हे पृथ्वी!

हे पहाड़ों, आगे बढ़ो, गीत गाओ क्योंकि यहोवा ने अपने लोगों को शान्ति दी है और उन पर दया करेगा। पीछे श्लोक 44, 23 को देखें। क्या हो रहा है? खुशी के लिए गाओ।

कौन? कौन गा रहा है? स्वर्ग और पृथ्वी, पहाड़, पेड़। वह क्या है? क्या गा रहा है? प्रकृति गा रही है. हाँ।

ठीक है, अब वापस अध्याय एक पर जाएँ। हम अगले सप्ताह फिर से ऐसा करने जा रहे हैं, लेकिन यह ठीक है। श्लोक दो, अपने लोगों के खिलाफ भगवान के मामले को सुनने के लिए जूरी कौन है? स्वर्ग और पृथ्वी।

हाँ। प्रकृति हमारे पापों की साक्षी है और प्रकृति ही हमारी मुक्ति से प्रसन्न होती है। क्या तुम्हें याद है कि पौलुस ने रोमियों की पुस्तक में क्या कहा है? सारी प्रकृति हमारी मुक्ति की प्रतीक्षा में कराह रही है।

प्रकृति को हमारी पापपूर्णता के कारण श्राप मिला है और वह दिन आएगा जब प्रकृति को मुक्ति मिलेगी और इसलिए प्रकृति इस सेवक के कार्य से आनंदित होती है। वहाँ 44 में और फिर 49 में। इससे पहले कि हम इसे छोड़ें, मैं चाहता हूँ कि आप श्लोक नौ को देखें और फिर मैं चाहता हूँ कि आप इसकी तुलना 61.1 से करें। प्रभु परमेश्वर की आत्मा मुझ पर है क्योंकि प्रभु ने गरीबों को शुभ समाचार देने के लिये मेरा अभिषेक किया है।

उसने मुझे टूटे मन वालों को बाँधने, बन्धुओं को स्वतन्त्रता का प्रचार करने, और जो बँधे हुए हैं उनके लिये बन्दीगृह खोलने के लिये भेजा है। 49.9 और बन्दियों से कहा, बाहर आओ, जो अन्धियारे में हैं, उनके सामने आओ। यह नौकर कौन है? यह आदर्श सेवक है।

यह मसीहा है। संक्षेप में, सेवक का कार्य हमारे लिए परमेश्वर का सेवक बनना संभव बनाता है। अब, हमारे लिए सवाल यह है कि यह कैसे होगा? यह सेवक जो परमेश्वर के प्रति वफ़ादार है, जिसे गर्भ से बुलाया गया है, यह दास बंधुओं को स्वतंत्रता का प्रचार करने वाला है।

बाबुल के बन्धुएँ नहीं, परन्तु वे जो पाप के बन्धुएँ हैं। और हमारे मन में सवाल उठता है कि वह ऐसा कैसे करेगा? लेकिन यह वहाँ है। अध्याय 42 में, इस सेवक के रहस्योद्घाटन पर खुशी के पूरे छह छंद थे।

और शायद आपको याद हो कि मैंने 41 से 48 में कहा था, एक को छोड़कर सभी संदर्भ राष्ट्र के लिए हैं। यहाँ 49 से 55 में, मुझे कहना चाहिए, और वह सेवक था जो आज्ञाकारी है, जो संवेदनशील है, जिसे भगवान ने बुलाया है, जिसे लोगों के साथ वाचा बांधने के लिए, राष्ट्र को न्याय दिलाने के लिए बुलाया गया है। वही यहाँ है।

49 से 55 में एक को छोड़कर सभी आदर्श सेवक हैं। और वह अध्याय 54 में सबसे आखिरी है। तो, अनुपात में एक दिलचस्प फ्लिप-फ्लॉप जो हम यहाँ कर रहे हैं।

मुझे लगता है कि 41 से 48 में जो चल रहा है वह यह है कि भगवान वहाँ इस आदर्श सेवक का परिचय करा रहे हैं। उनका मुख्य कहना यह है कि आप चुने गए हैं। मैंने तुम्हें त्यागा नहीं है।

मैं अपने मामले में आपका उपयोग करने जा रहा हूँ। और यदि आपके मन में यह सवाल है कि यह कैसे होता है, तो चलिए मैं आपको बताता हूँ। मैं अभी इस बंदे का आपसे परिचय कराता हूँ।

अब, यहाँ हम दूसरे रास्ते पर चलते हैं। मैं आपको याद दिलाता हूँ कि उसने यह आपके लिए किया है, लेकिन प्राथमिक जोर उसी पर है। ठीक है।

तो, इज़राइल क्या है? नौकर की इस बड़ी खुशखबरी पर पहाड़ और टीले गा रहे हैं। और पद 14 में इस्राएल किस प्रकार प्रतिक्रिया देता है? अविश्वास। प्रभु ने मुझे त्याग दिया है।

प्रभु मुझे भूल गये हैं। और आप पहाड़ों, आकाश और पृथ्वी को यह कहते हुए सुनते हैं, ओह, अच्छा दुःख। ये लोग चमगादड़ों की तरह अंधे हैं।

और यशायाह बिल्कुल यही कह रहा है। इसलिए, यदि आप अध्याय 40 श्लोक 27 को देखें, तो आपको वहां कुछ इसी तरह की प्रतिक्रिया दिखाई देती है। परमेश्वर की उद्धार करने की इच्छा, उद्धार करने की उसकी क्षमता, और उद्धार करने का उसका इरादा प्रकट हो गया है।

और लोगों ने उत्तर दिया, मेरा मार्ग यहोवा से छिपा है। मेरे ईश्वर ने मेरे अधिकार की अवहेलना की है। अब, यहाँ 49 14 में, यह थोड़ा अलग है।

यह किस प्रकार भिन्न है? 49 27 में प्रभु से क्या छिपा है? मेरा रास्ता और मेरा अधिकार. अब, 49 14 के बारे में क्या? प्रभु ने मुझे त्याग दिया है। वह मुझे भूल गया है।

यह और अधिक तीखा हो गया है। उसने मेरे तरीके की उपेक्षा की है। वह उस स्थिति को नहीं समझता जिसमें मैं हूँ।

उसने मुझे छोड़ दिया है। और यही यहाँ ज्वलंत प्रश्न बनने जा रहा है। हम उस त्याग मात्र से कैसे उबरेंगे? हाँ, भगवान ने उन्हें त्याग दिया क्योंकि वे इसके योग्य थे।

वे इसे अपने ऊपर ले आए। अब, वह उन्हें अपने पास वापस कैसे लाएगा? ठीक है। भगवान की प्रतिक्रिया क्या है? श्लोक 15 के बारे में क्या ख्याल है? क्या एक दूध पिलाने वाली माँ अपने बच्चे को भूल सकती है? शायद वह ऐसा कर सकती थी, लेकिन मैं तुम्हें नहीं भूलूंगा।

मैंने तुम्हें अपनी हथेलियों पर उकेरा है। गोदना. यह बहुत बड़ा हाथ है।

हम सभी के नाम वहां लिखे हुए हैं। अब, यदि आप श्लोक 15 से 26 तक देखें, तो एक प्रचलित चिंता है कि इज़राइल को ईश्वर संबोधित कर रहा है। इन श्लोकों में भगवान क्या करने का वादा कर रहे हैं? वह आपके बच्चों को वापस देने जा रहा है।

अपनी आँखें ऊपर उठाएँ या श्लोक 18, अपनी आँखें चारों ओर उठाएँ और देखें कि वे सभी इकट्ठे हो जाएँगे। जैसे मैं जीवित हूँ वे तुम्हारे पास आएंगे, यहोवा की यही वाणी है। तुम उन सबको आभूषण के रूप में पहनोगे।

आप उन्हें दुल्हन की तरह बांधेंगी। निःसन्देह तुम्हारा उजाड़ स्थान, और तुम्हारा देश उजाड़ हो जाएगा। निश्चय ही अब तुम अपने निवासियों के लिये बहुत संकीर्ण हो जाओगे।

जो तुझे निगल गए, वे दूर हो जाएंगे। तेरे शोक के सन्तान फिर तेरे कान में कहेंगे, यह स्थान मेरे लिये बहुत सकरा है। मेरे रहने के लिए जगह बनाओ।

तब तू अपने मन में कहेगा, मेरे लिये ये किस ने उत्पन्न किया? मुझे शोक संतप्त और बंजर कर दिया गया, निर्वासित कर दिया गया और दूर रख दिया गया। इन्हें किसने पाला है? मैं अकेली रह गई हूँ। ये कहाँ से आये? अब, निर्वासित लोगों के लिए यह चिंता का विषय क्यों होगा? निर्वासित लोग आमतौर पर गायब हो जाते थे।

परमेश्वर ने इब्राहीम से ये प्रतिज्ञाएँ की थीं, परन्तु वे निर्वासन में हैं। उनके सभी बच्चे अच्छे बेबीलोनियाई बनने जा रहे हैं। एक पीढ़ी को देखते हुए, इज़राइल अब अस्तित्व में नहीं रहेगा।

और भगवान कहते हैं, नहीं, विपरीत सत्य होने वाला है। आप कहेंगे, ये सारे बच्चे कहाँ से आये? हाँ, हम उन्हें कहाँ रखने जा रहे हैं? और आप देखिए, वास्तव में, बिल्कुल वैसा ही हुआ। हिब्रू लोग केवल निर्वासन में थे।

यहूदी लोग केवल डेढ़ पीढ़ी तक, 586 से 539 तक, लगभग 45 वर्षों तक निर्वासन में रहे। भगवान कहते हैं, नहीं, मैं ऐसा नहीं होने दूंगा। आप गायब नहीं होने वाले हैं।

आप विघटित नहीं होने वाले हैं। मैं तुम्हारे जीवन की रक्षा करने जा रहा हूँ। मैं तुम्हें अपने पास पुनः स्थापित करने जा रहा हूँ।

तो श्लोक 24, क्या प्रार्थना को शक्तिशाली से छीना जा सकता है या किसी अत्याचारी के बंदियों को बचाया जा सकता है? यहोवा यों कहता है, शूरवीरों के बन्धु भी पकड़े जाएंगे, और अत्याचारियों का शिकार छुड़ाया जाएगा। क्योंकि जो तुझ से झगड़ते हैं मैं उन से लड़ूंगा, और तेरे लड़केबालोंको बचाऊंगा। अध्याय 44 में वह कहता है, मैं सूखी भूमि पर जल बरसाऊंगा, और तुम्हारे वंशज जलमार्गों के किनारे झाड़ियों की नाई उगेंगे।

और उन में से एक अपने हाथ पर लिखेगा, प्रभु का, और दूसरा कहेगा, मैं याकूब का हूँ, और कोई कहेगा, मैं प्रभु का हूँ। तो वह वादा, नहीं, नहीं, मैं आपको लोगों के रूप में गायब नहीं होने दूंगा। अब, मुझे विश्वास करना होगा कि वह वादा अभी भी यहूदी लोगों पर लागू हो रहा है।

मुझे नहीं लगता कि 2,000 वर्षों से हम ईसाइयों द्वारा यहूदियों से छुटकारा पाने की कोशिश के बाद आज आप यहूदियों के अस्तित्व की व्याख्या कर सकें। वे वहाँ हैं। फिर भी एक सुसंगत समूह।

मुझे नहीं लगता कि इसके लिए इस तथ्य के अलावा कोई अच्छी व्याख्या है कि ईश्वर उनकी देखभाल करना जारी रखता है। वह उनके लिए तरसता रहता है, उनके लिए तरसता रहता है, और अपने हाथ के नीचे उनकी रक्षा करता रहता है। अब, आप यहूदियों से पूछें, और उनमें से कई कहेंगे, यदि चुने जाने का यही मतलब है तो हम असुरक्षित रहना चाहेंगे।

लेकिन, वास्तव में, मुझे ऐसा लगता है कि वे अभी भी चुने हुए लोगों में से हैं। हां, हां। हितलर, गोएबल्स और गोअरिंग ने पृथ्वी से यहूदी धर्म को नष्ट करने को अपना मिशन बना लिया।

और आज हिटलर और गोएबल्स और गोअरिंग कहाँ हैं? बहुत गर्म स्थान पर. हां हां। ठीक है, अब मैं चाहता हूँ कि आप 23 का अंतिम भाग और 26 का अंतिम भाग देखें।

वहाँ ऐसे कथन हैं जिनका हमने इस अध्ययन और अन्य अध्ययनों में सामना किया है। भगवान का उद्देश्य क्या है? हां हां। तुम्हें पता चल जाएगा, वह श्लोक 23 है, और श्लोक 26 में कौन जानेगा? सभी प्राणी, सभी मनुष्य जान लेंगे कि मैं यहोवा, तुम्हारा उद्धारकर्ता, तुम्हारा मुक्तिदाता, याकूब का पराक्रमी हूँ।

परमेश्वर का उद्देश्य यह है कि हम उसे जान सकें। पॉल ने इसे फिलिप्पियों की पुस्तक में उठाया है। वह कहते हैं, यहां मेरी सारी उपलब्धियां हैं।

दुनिया में बहुत, बहुत कम लोग उस सूची की बराबरी कर सकते हैं, लेकिन मैं आपको बताता हूँ, मैं इसे सब खाद मानता हूँ। मैं सब कुछ गँवाकर, मूर्ख कहलाकर खुश हूँ, ताकि मैं मसीह को जान सकूँ और उनमें पाया जा सकूँ। इसलिये नहीं कि मैं बच सकूँ।

इसलिए नहीं कि मेरे पाप क्षमा किये जायें। इनमें से किसी में भी कुछ भी गलत नहीं है, लेकिन जो लक्ष्य पॉल का ध्यान खींचता है वह है, मैं उसे जानना चाहता हूँ, उसके बारे में सब कुछ जानना चाहता हूँ, उसे अपने व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में जानना चाहता हूँ, उसे अपने व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में जानना चाहता हूँ। उसे मेरा निजी मुक्तिदाता जानो, मेरा मित्र जानो।

बिलकुल, बिल्कुल। आप जानते हैं कि पॉल जब कहता है तो वह गंभीर होता है, और मैं उसकी पीड़ा के बारे में जानना चाहता हूँ। जिससे मुझे प्यार हो गया है अगर उसे कलवरी तक चलना है तो मैं उसके साथ वहां तक चलना चाहती हूँ।

अब आप जानते हैं कि वह गंभीर है। अब आप जानते हैं कि वह गंभीर है। अरे हाँ, मैं उसे जानना चाहता हूँ जब सूरज चमक रहा हो।

जब सब कुछ ठीक चल रहा हो तो मैं उसे जानना चाहता हूँ।' पॉल का कहना है कि मैं उसे कैल्वरी तक हर तरह से जानना चाहता हूँ। क्योंकि, वह कहते हैं, मैं जानता हूँ कि कलवारी के दूसरी ओर पुनरुत्थान है।

वह महज़ एक स्वपीड़कवादी नहीं है। खैर, यीशु ने कष्ट सहा, इसलिए मैं भी कष्ट सहना चाहता हूँ। नहीं, यीशु ने कष्ट सहा ताकि वह मृतकों में से जीवित हो सके, और यही मैं चाहता हूँ।

ठीक है, चलिए आगे बढ़ते हैं। खंड वास्तव में चलता है, जैसा कि आपकी शीट पर है, 49, 14 से 50, श्लोक 3 तक। आपने मुझे त्याग दिया है। नहीं, मैंने नहीं किया है, और यहां इसका सबूत है जिसे आप देखने जा रहे हैं।

आप जितनी कल्पना कर सकते हैं उससे कहीं अधिक बच्चे पैदा करने वाले हैं। क्यों? क्योंकि मैं तुम्हारा उद्धारकर्ता हूँ। अच्छा, एक मिनट रुकिए.

अध्याय 50, श्लोक 1, 2, और 3। अब, मैंने पृष्ठभूमि में आपसे इसके बारे में बात की। बन्धुए लोग यहोवा पर यहूदा को त्यागने का दोष लगा रहे थे। त्यागा हुआ और तलाकशुदा एक ही शब्द हैं।

आपने हमें तलाक दे दिया है। खैर, कानून यह स्पष्ट करता है कि कोई पति किसी तलाकशुदा महिला से दोबारा शादी नहीं कर सकता, जैसे कि उसने किसी अन्य पति के साथ संबंध बनाए हों। तो, आपने हमें तलाक दे दिया है।

आप हमें वापस नहीं ले जा सकते। या, एक अलग रूपक का उपयोग करने के लिए, आपको अपने लेनदारों को भुगतान करने के लिए हमें बेचना होगा। तो, आप हमें वापस नहीं ला सकते, और भगवान कहते हैं, आपकी माँ का तलाक का प्रमाण पत्र कहाँ है? कौन कहता है मैंने तुम्हें तलाक दे दिया? मैंने तुम्हें अपने किस लेनदार को बेच दिया? तेरे अधर्म के कामों के कारण तू बेचा गया।

तेरे अपराधों के कारण तेरी माता को विदा कर दिया गया। लेकिन पूरी बात यह है कि, नहीं, भगवान को उनकी इच्छा के विरुद्ध ऐसा करने के लिए मजबूर नहीं किया गया था। बेबीलोनियों ने उसके साथ ऐसा नहीं किया, हालाँकि वह इसे रोकना चाहता था।

नहीं, ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उसने इसे करना चुना, और स्वतंत्र रूप से इसे करने का चयन करते हुए, वह स्वतंत्र रूप से आपको फिर से वापस लेने में सक्षम है। अब, पद 2, कुछ संभावित व्याख्याएँ। एक संभावना यह है कि हस्तक्षेप करने वाला और इस प्रकार निर्वासन को रोकने वाला कोई नहीं था।

ऐसा लगता है कि ईजेकील उसी तरह से बात कर रहा है। गैप में खड़ा होने वाला कोई नहीं था। अब, फिर से, यह सेमेटिक है, और सेमेटिक में अतिशयोक्ति है।

क्या बन्धुवाई के समय यहूदा में कोई धर्मी लोग नहीं थे? नहीं, धर्मी लोग थे, लेकिन पर्याप्त नहीं थे। और वैसे ही यहाँ भी। क्या कोई बीच-बचाव करने वाला नहीं था? ज़रूर, बीच-बचाव करने वाले लोग थे, लेकिन पर्याप्त नहीं थे।

हालाँकि, यह भी संभव है कि श्लोक कह रहा है, तुम निर्वासितों के बीच अब कोई नहीं है जो तुम्हें छुड़ा सके, है ना? तो, क्या मेरा हाथ छोटा हो गया है? यदि कोई नहीं है, यदि निर्वासन के समय कोई धर्मी व्यक्ति नहीं था, यदि उस समय कोई मध्यस्थ नहीं था, यदि अब कोई नहीं है जो तुम्हें बचा सके, तो क्या इसका मतलब यह है कि मैं नहीं कर सकता? नहीं, अब, यह हाथ और बांह वाली चीज़ बहुत महत्वपूर्ण होने वाली है। मैं आपसे उस पर सावधानीपूर्वक ध्यान देने के लिए कहूँगा।

भगवान की मुक्ति की शक्ति के बारे में बात करने के लिए दोनों का परस्पर उपयोग किया जाता है, और विशेष रूप से अगले सप्ताह के हमारे अध्ययन में, यह काफी महत्वपूर्ण होगा, जिस तरह से काम करता है। तो, फिर हम अध्याय 50 श्लोक 4 से 9 तक आते हैं। यहाँ तीसरी बार नौकर बोलता है। पहला अध्याय 42 में था, दूसरा 49 में था, और यहाँ तीसरा है।

प्रभु परमेश्वर ने मुझे उन लोगों की जीभ दी है, जिन्हें सिखाया जाता है, कि मैं थके हुए को अपने वचन से सम्भालना जानूँ। वह भोर को भोर को जगाता है, वह मेरे कानों को जगाता है कि मैं उन लोगों के समान सुनूँ जो सिखाए गए हैं। प्रभु परमेश्वर ने मेरा कान खोल दिया है और मैं विद्रोही नहीं था।

मैं पीछे नहीं मुड़ा। मैं ने मारने वालों को अपनी पीठ दे दी, और दाढ़ी नोचने वालों को अपने गाल दे दिए। मैं ने अपमान और थूकने से अपना मुंह न छिपाया, परन्तु यहोवा परमेश्वर ने मेरी सहायता की।

इसलिए मेरी बदनामी नहीं हुई। इसलिये मैं ने अपना मुख चकमक पत्थर के समान कर लिया है। मैं जानता हूँ मुझे शर्मिदा नहीं होना पड़ेगा।

क्या आपको याद है कि मैंने आपको शर्मिदा होने के बारे में पहले क्या कहा था? अपमान का विचार क्योंकि आपने जिस चीज पर भरोसा किया और वह विफल हो गई। मुझे लज्जित नहीं होना पड़ेगा। जो मुझे निर्दोष ठहराता है, वह निकट है।

कौन मुझसे मुकाबला करेगा? आइए हम एक साथ खड़े हों। मेरा विरोधी कौन है? उसे मेरे करीब आने दो। देखो, प्रभु परमेश्वर मेरी सहायता करता है।

मुझे दोषी कौन घोषित करेगा? देखो, वे सब वस्त्र की नाई पुराने हो जाएंगे। कीड़ा उन्हें खा जायेगा। ठीक है।

इस अनुच्छेद से हम इस व्यक्ति के बारे में क्या कह सकते हैं? चलो बस जल्दी से। हमारा समय उड़ता जा रहा है। हम उसके बारे में क्या कह सकते हैं? ठीक है।

वह आज्ञा मानने वाला है। वह आज्ञा मानने के लिए कृतसंकल्प है। मुझे इसे इस तरह से कहने दीजिए।

ठीक है। और क्या? ठीक है। वह एक प्रोत्साहक हैं।

और क्या? ठीक है। हाँ। ठीक है।

और क्या? ठीक है। ठीक है। ठीक है।

क्या? रोशनी। ठीक है। सुनने के लिए कान कैसा हो? वह सुनता और बोलता है।

हालाँकि एक और बात है जिसके बारे में काफी महत्वपूर्ण कहा गया है। उसे कष्ट होगा, हुह? हाँ। और मुझे लगता है कि हम यह मान सकते हैं कि यह स्पष्ट रूप से नहीं कहा गया है, लेकिन हम यह मान सकते हैं कि वह अन्यायपूर्ण तरीके से पीड़ित होता है।

वह कहते हैं, "कोई मुझे दोषी नहीं ठहराएगा." एक बार फिर, हम राष्ट्र के बारे में बात नहीं कर रहे हैं। यदि इसके बारे में कोई प्रश्न था, तो मुझे लगता है कि इसका उत्तर श्लोक 10 में दिया गया है।

याद रखें मैंने हिब्रू कविता के बारे में क्या कहा है? हिब्रू कविता की मुख्य विशेषता क्या है? पर्यायवाची समानता। दूसरी पंक्ति भी पहली जैसी ही बात कहती है, लेकिन थोड़े अलग शब्दों में। तो, श्लोक 10 को देखें।

यहाँ समानता के अनुसार नौकर कौन है? भगवान। यदि तुम यहोवा का भय मानते हो, तो तुम दास की बात मानते हो। यदि तुम सेवक की बात मानते हो, तो तुम यहोवा का भय मानते हो।

सेवक यहोवा के तुल्य है। हे भगवान। सो यदि तुम सेवक की बात मानते हो, तो यहोवा का भय मानते हो।

और फिर जो मुद्दा वहां सामने लाया जाता है, वह है, जैसा कि आपने यहां बताया है, प्रभु में पूर्ण विश्वास। अन्याय के सामने, अनुचित पीड़ा के सामने उस पर भरोसा करना। और फिर, हम अपने आप से पूछते हैं, अच्छा, वह कहां से आता है? क्यों? अच्छा, यह व्यक्ति कष्ट क्यों उठाता है? उनका इलाज क्यों किया जाता है? उसके साथ बुरा व्यवहार क्यों किया जाता है? और हम अभी तक इसका उत्तर नहीं जानते हैं।

तो, यदि आप अंधेरे में चलते हैं, तो समाधान क्या है? श्लोक 10 और 11 के अनुसार, आपके पास दो विकल्प हैं। आप अपने लिए आग जला सकते हैं, और क्या होगा? नहीं, तुम पीड़ा में पड़े रहोगे। तुम अपने आप को जला लोगे।

और यह कितना सच है। ये कितना सच है। मैं अपनी शिक्षा से अपना मार्ग रोशन करूंगा।

मैं अपनी उपलब्धियों से अपना मार्ग रोशन करूंगा। मैं अपनी शक्ति से अपना मार्ग रोशन करूंगा। मैं मानव प्रेम से अपना मार्ग रोशन करूंगा।

और भगवान कहते हैं, सौभाग्य। हालाँकि, श्लोक 10 क्या कहता है? यदि आपके पास कोई रोशनी नहीं है, तो आपको क्या करना चाहिए? प्रभु के नाम पर भरोसा रखें और उसके ईश्वर पर भरोसा रखें। क्या हमने इस पुस्तक में विश्वास के बारे में कुछ सुना है? यदि हम नहीं हैं, तो आप यहां नहीं हैं।

हां हां। सेवकाई का पूरा आधार ईश्वर में पूर्ण विश्वास है, और हम उसकी कृपा के कारण उस पर भरोसा कर सकते हैं। ठीक है, फिर 51 पर आगे बढ़ें।

ध्यान दें कि यहां सुनना कितनी बार दोहराया जाता है। हे धर्म पर चलनेवालों, मेरी सुनो। श्लोक चार, मेरी ओर ध्यान दे, हे मेरी प्रजा, मेरी ओर ध्यान दे।

पद सात, हे धर्म के जाननेवालों, मेरी सुनो। वह किससे बात कर रहा है? क्या आप इसे पकड़ सकते हैं? तुम जो धर्म का अनुसरण करते हो। श्लोक चार, मेरे लोगों!

श्लोक सात, तुम जो जानते हो कि ठीक क्या है। अब, भगवान इन लोगों को क्यों संबोधित कर रहे हैं? खैर, उन्हें सुनने में कठिनाई होती है। आपके क्या विचार हैं? आपको जो कहना है वह इन लोगों से क्यों कहें? ठीक है, मुझे लगता है कि यह बिल्कुल सही है।

ये वे लोग हैं, जो बेहतर या बदतर के लिए, वास्तव में धार्मिकता की तलाश कर रहे हैं। इसलिए, जो कहा जाने वाला है उसे सुनने का एक मौका है। हां हां हां हां।

और फिर, हम निर्वासितों के बीच की स्थिति के बारे में सोच सकते हैं। मुझे लगता है कि आपके पास निश्चित रूप से लोगों के कम से कम तीन समूह हैं। जो लोग धार्मिकता की तलाश में हैं।

जो लोग धर्म का उपहास उड़ा रहे हैं और कह रहे हैं कि अरे यह तो सब पागलपन है। हमें बस अच्छे बेबीलोनवासी बनने की जरूरत है क्योंकि बाइबिल की शिक्षा गलत है। और फिर आपके पास बीच में पूरा बड़ा समूह है जो जीवित बचे हुए हैं।

इन लोगों के लिए शायद ज्यादा उम्मीद नहीं है। लेकिन ये लोग, यदि ये लोग डटे रहेंगे और हार नहीं मानेंगे और वास्तव में परमेश्वर के वचन पर विश्वास करेंगे, तो कुछ आशा है कि वे इन लोगों पर कुछ प्रभाव डाल सकते हैं। तो, भगवान उनसे क्या कहते हैं? पद 2, अपने पिता इब्राहीम की ओर देखो।

याद रखें कि आप कहां से आए हैं। यह मत भूलो। श्लोक 3, क्योंकि यहोवा सियोन को शान्ति देता है।

यह पहली बार आराम है, और आपको याद है, मुझे आशा है, जो मैंने पहले कहा था, वह आराम सबसे अच्छा अनुवाद नहीं है। प्रोत्साहित करना, मजबूत करना बेहतर शब्द है। लेकिन यह पहली बार है कि यह शब्द अध्याय 40 के बाद सामने आया है।

एक कारण मुझे लगता है कि अध्याय 40 41 से 55 तक सभी का परिचय देता है। इसलिए, मैं आपको प्रोत्साहित करना चाहता हूं। जारी रखें।

पद 4, तोराह मेरे पास से निकल जाएगा। मैं अपना न्याय देश देश के लोगों के लिये उजियाला ठहराऊंगा। मेरी धार्मिकता निकट आ गई है।

मेरा उद्धार हो गया। मेरी भुजाएँ देश देश के लोगों का न्याय करेंगी। और समुद्र तट, पृथ्वी के छोर, मेरे लिए आशा करते हैं, चाहे वे इसे जानते हों या नहीं।

वे मेरी बाँह का इंतज़ार करते हैं। इसलिए, तुम जो धार्मिकता के खोजी हो, हार मत मानो। मेरा उद्धार आ रहा है, और यह संसार के लिए है।

अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाओ। नीचे पृथ्वी को देखो. आकाश धुँएँ के समान लुप्त हो जाता है।

पृथ्वी वस्त्र की नाई पुरानी हो जाएगी। जो उसमें बसेंगे वे इसी रीति से मरेंगे। परन्तु मेरा उद्धार सदा के लिये होगा।

मेरी धार्मिकता कभी नष्ट नहीं होगी. आकाश और पृथ्वी, वे भाग जायेंगे। परन्तु मेरा उद्धार, मेरी धार्मिकता सदैव बनी रहेगी।

इसे मत भूलना. इसलिए, पद 7, मनुष्य की निन्दा से मत डरो, या उनकी निन्दा से निराश न हो। वहीं रूको बेटे।

यह लिविंग ओसवाल्ड संस्करण है। कीड़ा उन्हें वस्त्र की नाई खा जाएगा। परन्तु मेरी धार्मिकता सर्वदा बनी रहेगी।

सभी पीढ़ियों के लिए मेरा उद्धार। तो, जाहिर है, वह उन लोगों को प्रोत्साहित करना चाह रहे हैं जो शायद दुलमुल हैं। भगवान कह रहे हैं, ऐसा मत करो.

खड़ा होना। अटल होना। ओह, यह आपके और मेरे लिए कितना सच है क्योंकि हम देखते हैं कि हमारे चारों ओर ईसाईजगत का पतन हो रहा है।

मुझे लगता है कि अध्याय 51, श्लोक 1 से 8, हमारे लिए है। वहाँ पर लटका हुआ। तो, वे कैसे प्रतिक्रिया देते हैं? श्लोक 9, जागो, हे प्रभु के बाहु!

आप लोग कहाँ थे? लेकिन कम से कम, कम से कम, वे जवाब दे रहे हैं। एक बार फिर, यहाँ हाथ है। तो, हमने इसे श्लोक 5, दो बार देखा है।

मेरी भुजाएँ देश देश के लोगों का न्याय करेंगी। समुद्र तट, पृथ्वी के छोर, मेरे लिए आशा करते हैं। वे मेरी बाँह का इंतज़ार करते हैं।

याद रखें, रुको? पृथ्वी के छोर मुक्ति की उसकी शक्तिशाली भुजा के लिए परमेश्वर पर भरोसा कर रहे हैं। यहां तो यह फिर से है। जागो, प्रभु की भुजा!

और वे सृष्टि के प्राचीन मिथक की ओर संकेत का उपयोग करते हैं। आप ही वह व्यक्ति हैं जिसने वास्तव में अराजकता को नष्ट कर दिया, और आपने लाल सागर में ऐसा किया। मोक्ष ही वह चीज़ है जिसके बारे में आप सोच रहे हैं।

और फिर, यहां 51, 11 है। प्रभु के छुड़ाए हुए लोग लौट आएंगे और गाते हुए सिंथोन में आएंगे। उनके सिर पर अनन्त आनन्द रहेगा।

उन्हें खुशी और खुशी मिलेगी. दुःख और आह दूर हो जायेंगे। मैं, मैं वह हूँ जो आपको प्रोत्साहित करता हूँ।

तुम कौन हो कि उस मनुष्य से डरते हो जो मर जाता है, या मनुष्य के पुत्र से जो घास के समान बना है, और भूल गए हो? क्या तुम्हें लगता है मैं तुम्हें भूल गया? तुम अपने सृजनहार यहोवा को, जिसने आकाश का ताना-बाना फैलाया, और पृथ्वी की नेव डाली, भूल गए, और अन्धेर करनेवाले के क्रोध के कारण दिन भर डरते रहते हो। क्या आप चाहते हैं कि मैं जाग जाऊँ? आपको जागते रहने की जरूरत है, आने वाली सभी चीजों में उलझे नहीं रहने की जरूरत है, और हमारा ध्यान हमारे उद्धारकर्ता से हटाने की जरूरत है। तो, भगवान यहाँ क्या कर रहा है? वह इन लोगों को विश्वास करने, यह याद रखने के लिए कि वह कौन है, यह याद रखने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है कि उसने क्या किया है।

तो फिर, श्लोक 17 में, किसे जागने की जरूरत है? जेरूसलम को जागने की जरूरत है. यह प्रभु की भुजा नहीं है जिसे जागने की जरूरत है, यह यरूशलेम है जिसे जागने की जरूरत है। और यहां हमारे समापन मिनटों में, मैं चाहता हूँ कि आप यहां भाषण के एक चित्र को देखें।

पद 17. तू ने यहोवा के हाथ से पी लिया है, क्या? उसके क्रोध का प्याला. तू ने उस कटोरे को, डगमगाते हुए प्याले को बहुत पी लिया है।

अब, पद 21. हे दुःखी लोगों, जो मतवाले तो हो, परन्तु दाखमधु से नहीं, यह सुनो। तेरा प्रभु यहोवा, जो अपनी प्रजा का मुक्रद्मा लड़ता है, यों कहता है, देख, मैं ने लड़खड़ा देनेवाले कटोरे और अपने क्रोध के कटोरे को तेरे हाथ से छीन लिया है, तू फिर कभी न पीएगा।

ठीक है, तो वह कहता है, तुमने इसे पी लिया, लेकिन वह खत्म हो गया है, और तुम्हारे दुश्मन इसे पीने जा रहे हैं। परन्तु प्रश्न यह है कि परमेश्वर उस प्याले को हमारे हाथ से कैसे छीन सकता है? हम इसके लायक हैं। उसका चेस्ट, हाँ, और उसका चेस्ट गेथसमेन के बगीचे में प्रदर्शित किया गया है।

क्या आपको याद है कि यीशु ने क्या कहा था? यदि हो सके तो यह प्याला मुझ से टल जाए। फिर भी, आपका काम हो जाएगा. लड़खड़ाने का प्याला, मानवता के सभी धिनौने पापों से भरा प्याला।

भगवान कहते हैं कि मैं इसे तुम्हारे हाथों से छीनने जा रहा हूँ। मैं इसे तुम्हारे शत्रु के हाथों में सौंपने जा रहा हूँ। लेकिन वह इसे हमारे हाथों से केवल तभी छीन सकता है जब वह खुद इसे पिए और इसे पूरी तरह से पिए।

हाँ, तुम मेरे सेवक हो। और सवाल यह है कि कैसे? वह कैसे हो सकता है? हम उसके सेवक कैसे हो सकते हैं? केवल तभी जब उस प्याले को हमारे हाथ से छीनने का कोई रास्ता मिल जाए।

चलिए प्रार्थना करते हैं। हे प्रभु यीशु! धन्यवाद। धन्यवाद कि जब पिता ने कहा, बेटा, कोई उपाय नहीं है। तुमने प्याला लिया और उसे नीचे तक पी लिया। धन्यवाद। हमारी मदद करो प्रभु.

गिरती हुई चर्च के बीच में, एक ऐसी संस्कृति के बीच में जो जितनी जल्दी हो सके खुद को नष्ट करने पर आमादा है। हमें खुशी से, शांति से, विजयी ढंग से खड़े होने में मदद करें। क्योंकि आप हमारा हौसला बढ़ाने आए हैं।

आप, अपनी पवित्र आत्मा की शक्ति में, हमें खड़े होने में सक्षम बनाने के लिए आए हैं। हे प्रभु, आपने मसीह में जो किया है उसके ज्ञान में और युग के अंत में आप क्या करेंगे इसकी निश्चितता में, खड़े रहने और खड़े रहने के लिए सब कुछ करने के बाद हमारी सहायता करें। आपके नाम पर, हम प्रार्थना करते हैं। तथास्तु।

यह यशायाह की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. जॉन ओसवाल्ट हैं। यह सत्र संख्या 24, यशायाह अध्याय 49 से 51 है।